

② **वर्तमानकालिक क्रिया -**

क्रिया के जिस रूप के द्वारा
 जारी समय में किसी कार्य के होने का बोध हो,
 वर्तमान कालिक क्रिया कहलाती है -

जैसे- जीया पुस्तक पढ़ती है। शिवम गाना गा रहा है।
 बच्चे फुलबॉल खेल रहे होंगे। मनीष तुम खाना खाओ।

वर्तमान कालिक क्रिया के पाँच भेद:-

(i) सामान्य वर्तमान कालिक क्रिया- 'ता है, ती है, ते है'।

क्रिया के जिस रूप के द्वारा

जारी समय में अर्थात् वर्तमानकाल में किसी कार्य के होने में सामान्य स्थिति का बोध हो, सामान्य वर्तमान कालिक क्रिया कहलाती है- जैसे- वह क्रिकेट खेलता है।
रेखा पूजा करती है। पूनम पुस्तक पढ़ती है। बच्चे प्रार्थना बोझते हैं।

(ii) अपूर्ण वर्तमानकालिक क्रिया - 'रहा है/ रही है/ रहे हैं'

क्रिया के जिस रूप के द्वारा

जारी समय में अर्थात् वर्तमान काल में किसी कार्य के जारी रहने अर्थात् अपूर्ण होने का बोध हो, अपूर्ण-वर्तमानकालिक क्रिया कहलाती है -

जैसे - किसान खेल जोत रहा है। मनीषा कपड़े धो रही है।
पिताजी प्रेस कर रहे हैं। नानी कहानी सुना रही हैं।

(iii) सँदिग्ध वर्तमान कालिक क्रिया - [ला। ली। ले। रहा। रही। रहे +
होगा / होगी / होंगे]

क्रिया के जिस रूप के द्वारा
जारी समय में अर्थात् वर्तमान काल में किसी कार्य के होने में
सँदिग्धता का बोध हो, सँदिग्ध वर्तमान कालिक क्रिया कहलाती है -

जैसे - रवि पुस्तक पढ़ता होगा। मीनू खाना पका रही होगी।
मोनिका सो रही होगी। धोबी कपड़े धो रहा होगा।

(iv) संभाव्य वर्तमान कालिक क्रिया - (शायद) गा/ली/ले/रहा/रही/रहे + हो/हों

क्रिया के जिस रूप के द्वारा

जारी समय में अर्थात् वर्तमान काल में किसी कार्य के होने में संभावना का बोध हो, संभाव्य वर्तमान कालिक क्रिया कहलाती है-

जैसे- बादल घने काले हो रहे हैं, शायद कहीं बरसाल हो रही हो।
बाहर शोर हो रहा है, शायद झगड़ा हो रहा हो।
पायलों की मधुर ध्वनि आ रही है, ऐसा लगता है राधा नाच रही हो।

(V) आज्ञार्थक वर्तमान कालिक क्रिया- 'र/ओ'

क्रिया के जिस रूप के द्वारा

जारी समय में अर्थात् वर्तमान काल में आज्ञा के अर्थ का बोध हो, आज्ञार्थक वर्तमान कालिक क्रिया कहलाती है-

जैसे- रहीम तुम पुस्तक पढ़ो। शिवानी तुम खाना पकाओ।
उससे कहो, वह अभी चला जाए। तुम यहाँ आओ।

③ भविष्यत् कालिक क्रिया— क्रिया के जिस रूप के द्वारा
 आने वाले समय में अर्थात् भविष्य में किसी कार्य के
 होने का बोध हो, भविष्यत् कालिक क्रिया कहलाती है—
 जैसे— मोनू उदयपुर जायगा। संतोष पत्र लिखेगा।
 शायद वह काप तक भाए। आप घूमने जरूर जायगा।

भविष्यत् कालिक क्रिया के चार भेद:-

(i) सामान्य भविष्यत् कालिक क्रिया - 'गा/गी/गे'

क्रिया के जिस रूप के द्वारा आने वाले समय में किसी के कार्य के होने में सामान्य स्थिति का बोध हो, सामान्य भविष्यत् कालिक क्रिया कहलाती है-
 जैसे - वट आरुगा। हम जाएंगे। रीमा खाना पकाएगी।
 मनोज पतंग उड़ाएगा। सीमा जाना जाएगी।

(ii) संभाव्य भविष्यत् कालिक क्रिया— 'र/ओ/ऊँ'

क्रिया के जिस रूप के द्वारा

आने वाले समय में संभावना के अर्थ का बोध हो,
संभाव्य भविष्यत् कालिक क्रिया कहलाती है—

जैसे— शायद वह कल तक आए। हो सकता है कि कल मैं नहीं आऊँ।
ऐसा लगता जैसे वह कल आए।
बादल घने काले हो रहे हैं शायद बरसात आए।

(iii) आज्ञार्थक भविष्यत् कालिक क्रिया – 'आश्ङगा / जाश्ङगा'

क्रिया के जिस रूप के द्वारा
आने वाले समय में आज्ञा के अर्थ का बोध हो,
आज्ञार्थक भविष्यत् कालिक क्रिया कहलाती है -

जैसे - आप मेरे घर भवश्य आश्ङगा।
तुम भी घूमने जरुर जाश्ङगा।

(iv) हेतुहेतुमद् भविष्यत् कालिक क्रिया-

क्रिया के जिस रूप के द्वारा

आने वाले समय मर्थात् भविष्य में किसी कार्य के होने में शर्त का बोध हो मर्थात् एक कार्य दूसरे कार्य पर आश्रित हो हेतुहेतुमद् भविष्यत् कालिक क्रिया कहलाती है-

जैसे-

यदि बरसात होगी तो फसल भी अच्छी पकेगी।

यदि तुम मेहनत करोगे तो अवश्य सफल हो जाओगे।